श्री गुरु पूर्णिमा

तर्ज़– नगरी – नगरी द्वारे– द्वारे ... ...

गुरु चरणों के बन अनुरागी, जन्म सफल कर जाईए जी ।
गुरु सेवा बिन ग्रंथ बतावें, जन्म – जन्म पछताईये जी।। टेक।।

गुरु पूजा और गुरु सेवा का शुभ घड़ियां शुभ दिन आया ।
ऋषि मुनि और सिद्ध संतों ने सत्गुरु का ही यश गाया।।
जे मार्ग दिखलाया सबने उस पर चलना चाहिए जी , गुरु ... ...

गुरु बिन गत और शाह बिन पत न यही बात मशहूर है।
घट की पूंजी सत्गुरु बाझों इन आंखों से दूर है।।
गुरु कृपा से घट के दर्शन घर में ठाकुर पाईये जी , गुरु ... ...

पूर्ण सत्गुरु पूरे शिष्य को पूरी जुगत बताते हैं।
माला मनका नज़र न आवे ऐसा जाप जपाते हैं।।
गुरु कृपा से स्वांस– स्वांस में सोहंग– सोहंग गाईये जी ,गुरु ... ...

राम कृष्ण और गुरुनानक ने गुरु की आज्ञा मानी है।
गुरु देवन के देव सदा ही गुरु का कोई सानी है।।
गुरु शब्द में सुर्त मिलाकर सहजे– सहज समाईये जी ,गुरु ... ...

वेद ग्रंथ गुरु महिमा को ऐ " दासा " गा –गा हार गए।
नारद और शुकदेव जनक भी गुरु कृपा से पार गये।।
गुरु चरणों की अमृत धूरी क्यों न सीस चढ़ाईए जी , गुरु ... ...

तर्ज़– प्रेम मेरा बढ़ता रहे ... ...

गुरु पूजा का शुभ दिन आया पूर्ण भाग जगे।
प्यारे सत्गुरु ने दर्स दिखाया पूर्ण भाग जगे।। टेक।।

आदि – अनादि गुरु की पूजा, गुरुमुख को कछु काम न दूजा।
सद्ग्रन्थों ने यह गाया , पूर्ण भाग जगे, गुरु पूजा ... ...

सद्गुरु मेरे हैं दुःख भंजन, बख़्श दिया इक प्रेम का अंजन ।
घर में घर दिखलाया, पूर्ण भाग जगे , गुरु पूजा ... ...

जो जन गुरु की पूजा करते, गुरु चरणों में पानी भरते।
अमर – अमर पद पाया, पूर्ण भाग जगे , गुरु पूजा ... ...

राम कृष्ण गुरु सेव कमावें, गुरु मूरत का ध्यान जमावें।
सत्य मार्ग दर्शाया, पूर्ण भाग जगे , गुरु पूजा ... ...

सत्गुरु पूरा गुर बतलावे, सुर्त निरत तज सहज समावे।
" दासनदास" सुनाया, पूर्ण भाग जगे , गुरु पूजा ... ...

तर्ज़– संभना देशा अंदर ... ...

गुरु की पूजा वाला, गुरु की पूजा वाला, शुभ दिन आ गया प्यारे।
खुशियां सेती एह तां, खुशियां सेती एह तां, समां सुहा गया प्यारे।। टेक।।

शुभ दिन बारह सावन आया, है अज पूर्णमाशी।
पूरे गुरु की सेव कमाओ, कट जावे चौरासी।।
हर दिल अंदर गुरु का, हर दिल अंदर गुरु का प्रेम समा गया प्यारे, गुरु ... ...

दूर – दूर थीं संगतां आके, गुरु की सेव कमावन।
विरले भागां वाले प्रेमी, गुरु चरणीं चित्त लावन।।
मुखड़ा सत्गुरु वाला, मुखड़ा सत्गुरु वाला मन नूं भा गया प्यारे , गुरु ... ...

घोर कलु विच प्रकट होके, सत्गुरु कृपा कीती ।
सहजे जाप – अजपा दस्सया, हरि भक्ति दी रीती।।
विरला गुरुमुख कोई, विरला गुरुमुख कोई भेद नूं पा गया प्यारे , गुरु ... ...

" दासनदास " कहे साजन जी, सब नूं होण वधाईयां
गुरु की पूजा करके हर दिल अंदर खुशियां छाईयां।।
लाल अमोला यही, लाल अमोला यही, अज हत्थ आ गया प्यारे , गुरु ... ...

अज दिन पूर्णमासी आया पूरे के गुण गाओ जी।
मंगो नाम दान सत्गुरु तों मुक्त पदार्थ पाओ जी।। टेक।।

पूरा एक है सच्चा नाम, इस बिन सारे निष्फल काम।
जप लो नाम सुबह ते शाम,तां फिर शाम मनाओ जी।।
ए कम कदे न पूरे होंदे,सारे छड अधूरे रोंदे।
मूर्ख नाम बीज नहीं बोंदे सुन के ध्यान लगाओ जी।।

पूर्णमासी वाली रात, होया चानन ते कुशलात।
अपने घर विच मारो झात, जगमग जोत जगाओ जी।।
मिलके "दासा" सत्गुरु ताहीं खोजो सत्नाम घर माहीं।
मिलसी अंदरो सच्चा साई, इत उत न भटकाओ जी।।

अज दिन पूर्णमासी आया, पूरे सत्गुरु आन मिलो।
दुःख जुदाई आन सताया, पूरे सत्गुरु आन मिलो।। टेक।।

हर कोई अपने सुख विच सुखिया, मैं अपराधी फिरदा दुखिया।
ढाढा तीर तुसां ने लाया, पूरे सत्गुरु ... ...

चुप– चुप रोवां वक़्त गुज़ारां, पिछलियां आवन याद बहारां।
कित्थे आके डेरा लाया, पूरे सत्गुरु ... ...

तुद बिन जेहड़ा वक़्त विहावे, औगण हार दी पेश न जावे।
कैसा क़िस्मत खेल रचाया, पूरे सत्गुरु ... ...

तरस – तरस कर ज़िंदड़ी जासी, याद तेरी दिल विच रह जासी।
कैसा मैंने लेख लिखाया , पूरे सत्गुरु ... ...

" दासनदास " बुलावे तैनूं, इक गल प्रीतम दस्स दे मैंनू।
क्यों कर साथों मुख छिपाया, पूरे सत्गुरु ... ...

तर्ज़– सत्गुरु प्यारे तेरे चरणां तों वारीयां ... ...

शुभ दिन गुरु पूजा वाला प्रेमी मना रहे।
सत्गुरु दी सेवा करके खुशियाँ मना रहे।। टेक।।

सत्गुरु दी पूजा करदे मानो भव सिंधु तरदे।
होके चाकर इस दर दे, खुशियाँ लुटा रहे।।

सत्गुरु दा ध्यान जमांदे , मनमुख पये बुरा मनांदे।
जन्म अनमोल गवांदे, बिरथा ही जा रहे।।

जो – जो अवतार आये, गुरु के ही दास कहाये।
बिन गुरु की सोझी पाये, ग्रंथ बतला रहे।।

नारद , शुकदेव, जनक जी गुरुमुखजन होये अनिक जी।
संशय न रहे तनिक जी, गुरु पदवी पा रहे।।

" दासनदास " कहाइये, निस दिन सेव कमाईये।
बिरथा न जन्म गंवाइये, ऋषिजन सुना रहे।।

तर्ज़– कित्थे गयों दिल लैके ... ...

गुरु की पूजा का सुंदर शुभ दिन आया ।
जय– जयकारों में सुंदर समा सुहाया ।। टेक।।

गुरु गुण गाना सेव कमाना, एह गुरुमुख की चाली।
सेवक हैं सब बाग़– बग़ीचे, सत्गुरु इसदे वाली।।
सत्गुरु प्यारे ने ऐसा बाग लगाया , गुरु ... ...

गुरु और पार ब्रह्म परमेश्वर, सूरज धूप की न्याई।
सूरज धूप अलग न जानो, सदा रहे इक ठाई।।
सारे ग्रंथ ने गुरु का ही यश गाया , गुरु ... ...

जो गुरु को मानुष कर जाने, सेवा पूजा कमावे।
दूध की इच्छा से वोह मूरख,घर में आक जमावे।।
बिन गुरु कृपा के जन्म – जन्म दुःख पाया , गुरु ... ...

ऋषि मुनि और सिद्ध मुनिवर, गुरु की सेव कमावे।
राम और लक्ष्मण जनकपुरी में, गुरु के चरण दबावें।।
विच रामायण में तुलसी जी फरमाया , गुरु ... ...

" दासनदास" गुरु चरणों पर बार– बार बलिहारी।
जन्म–जन्म की बिगड़ी मेरी, सत्गुरु आप संवारी।।
मेरे सिर पर है सत्गुरु का साया , गुरु ... ...

तर्ज़– नगरी– नगरी द्वारे –द्वारे ... ...

सत्गुरु स्वामी अन्तर्यामी घट की जानन हारे ने।
अनिक रूप धर जग में आए डूबे बेड़े तारे ने ।। टेक।।

शुभ दिन गुरु पूजा का आया, गुरु की पूजा करिए जी।
गुरु चरणों के चाकर होकर, गुरु का पानी भरिए जी।।
राम लक्ष्मण गुरु चरणों को, प्रेम से चापन हारे ने ,
सत्गुरु स्वामी अन्तर्यामी ... ...

नारद और शुकदेव जनक जी, गुरु की आज्ञा मानी थी।
मान – अपमान का त्याग किया,और सोचा लाभ न हानि थी।।
जिसने पाया गुरु से पाया, कहते ग्रंथ यह सारे ने ,
सत्गुरु स्वामी अन्तर्यामी ... ...

घट की रचना घट के दर्शन, गुरु बिन कौन करावे जी।
एह मनुवा जो दह – दिशि भटके, गुरु का शब्द ठहरावे जी।।
पांच – पच्चीसों सब वश आवें, यह दुश्मन जो भारे ने ,
सत्गुरु स्वामी अन्तर्यामी ... ...

गुरु के बंधन में जो आवे, सब बंध उसके छूट गये।
उसका ठौर – ठिकाना नाहीं, जिससे सत्गुरु रूठ गये।।
सदा रहन यम पिंजरे अंदर, फिरदे मारे – मारे ने,
सत्गुरु स्वामी अन्तर्यामी ... ...

" दासनदासा " गुरु भक्ति कर, तज मन के अभिमान को।
अवतारों और ऋषिजनों ने, पूजा गुरु भगवान को।।
सद्ग्रंथों ने यह ही गाया, जानन गुरुमुख प्यारे ने ,
सत्गुरु स्वामी अन्तर्यामी ... .